

धसाच रण

### **EXTRAORDINARY**

भाग II--सन्ध 3---उपखण्ड (ii)

PART II—Section 3—Sub-section (ii)

प्राथिकार से प्रकाशित

## PUBLISHED BY AUTHORITY

सं॰ 170]

नई दिल्ली, मंगलदार, मई 5, 1970/वैद्याल 15, 1892

No. 170] NEW DELHI, TUESDAY, MAY 5, 1970/VAISAKHA 15, 1892

इस माग में भिन्न पूछ संख्या वी जाती है जिससे कि यह धलग संकलन के कप में रखा जा सके Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation.

# MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Agriculture)

#### ORDER

New Delhi, the 5th May 1970

S.O. 1633.—Whereas the Central Government is of opinion that it is necessary so to do for maintaining and increasing supplies of milk and for securing its equitable distribution in the areas comprising the Union territory of Delhi and the Districts of Meerut and Bulandshahr in the State of Uttar Pradesh;

Now, Therefore, in exercise of the powers conferred by section 3 of the Essential Commodities Act, 1955 (10 of 1955), the Central Government hereby makes the following Order, namely:—

- 1. Short title, extent and commencement.—(1) This Order may be called the Delhi, Meerut and Bulandshahr Milk and Milk Products Control Order, 1970.
- (2) It extends to the areas comprising the Union territory of Delhi and the Districts of Meerut and Bulandshahr in the State of Uttar Pradesh.
- (3) It shall come into force on the 6th May, 1970 and shall cease to operate on the 14th July, 1970 except as respects things done or omitted to be done before such cesser of operation.
  - 2. Definitions.—In this Order, unless the context otherwise requires:—
    - (a) "controlling officer" means any officer appointed as such by the Government of Uttar Pradesh in respect of the Districts of Meerut and Bulandshahr and by the Delhi Administration in respect of the Union territory of Delhi, to exercise the powers and perform the duties of a controlling officer under this Order;

- (b) "export" means to take or cause to be taken, by any means whatsoever, out of any place within the areas to which this Order extends to any place outside those areas:
- (c) "milk" means the normal, clean and fresh secretion obtained by milking of the udder of a cow, buffalo, goat or sheep and includes milk with or without fat, butter milk, standardised milk, toned milk, double toned milk or milk prepared from milk powder, but does not include the article commonly known as dried milk or milk powder or condensed milk.
- 3. Prohibition of manufacture, sale, service, supply, export of milk and milk products.—No person shall—
  - (a) use milk of any kind for the manufacture of cream, casein, skimmed milk, khoa, rubree, paneer or any kind of sweets in the preparation of which milk or any of its products except ghee is an ingredient; or
  - (b) export milk of any kind; or
  - (c) sell, serve, supply or export or cause to be sold, served, supplied or exported cream, casein, skimmed milk, khoa, rubree, paneer; or any kind of sweets in the preparation of which milk or any of its products except ghee is an ingredient;

#### Provided that nothing in this clause shall apply-

- (i) to the use of milk for the manufacture of and to the sale, service, supply
  or export of ice cream, kulfi or kulfa, in the preparation of which no
  khoa, rubree or cream is used;
- (ii) to the export of milk of any kind by a person engaged in the manufacture of infant milk food,
  - (a) whose undertaking has been registered or licensed under the Industries (Development and Regulation) Act, 1951, (65 of 1951); and
  - (b) who has been exporting milk of any kind for the purpose of the manufacture of infant milk food immediately preceding the commencement of this Order, if he has obtained a permit to that effect from the controlling officer.
- 4. Powers of entry, search, seizure, etc.—(1) Any police officer, not below the rank of a head constable or any other person authorised by the controlling officer in writing in this behalf, may, with a view to securing compliance with this Order or to satisfying himself that this Order is being complied with,—
  - (a) stop and search any person or any boat, motor or other vehicle or any
    receptacle or machinery used or intended to be used for export of
    milk or for the manufacture of milk products;
  - (b) enter and search any place or premises where he has reason to believe that milk is stocked or that they are being used for the manufacture, sale, service or supply of milk products;
  - (c) seize or authorise the seizure of any milk or milk products in any place or premises together with packages, coverings, receptacles or machinery in which milk or milk products are found or with which such milk products are manufactured, or the animals, vehicles, vessels, boats or other conveyances used in carrying milk or milk products and thereafter take all measures necessary for securing the production of the packages, coverings, receptacles, machinery so seized in a court and for their safe custody pending such production.
- (2) The provisions of sections 102 and 103 of the Code of Criminal Procedure 1898 (5 of 1898), relating to search and seizure shall, so far as may be, apply to searches and seizures under this clause.

[6-19/69-LDI.]

# लाख, कृषि, सामुबाधिक विकास धीर सहकारिता मंत्रालय

# (कृषि विभाग)

### ग्रादेश

नई दिल्ली, 5 **मई** 1970

सा० का० नि० 1663 --यतः कन्द्रीय सरकार की यह राय है कि दूध के प्रदायों को बनाए रखने ग्रीर बढ़ाने श्रीर दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र श्रीर उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ श्रीर बुलन्दशहर के जिलों के क्षेत्रों में उसका साम्यापूर्ण वितरण सुनिष्चित करने के लिए ऐसा करने भावश्यक है;

श्रतः, श्रव, श्राचायक वस्तु श्रधिनियम, 1:55 (1955 का 10) की श्रारा 3 द्वारा प्रदत्त श्रवितयों का प्रयोग वन्ते हुए केन्द्रीय सरकार एसदुद्वारा निम्निलिखित श्रादेश करती है, श्रथितः --

- 1. संक्षिप्त नाम, विरक्षार श्रीर प्रारम्भः (1) यह आदेश दिरली, मैप्ट श्रीर क्लन शहर दूध और कुष्यच्छत्पाद नियंत्रण आदेश, 1970 कहा जा सकेगा।
- (2) इसका विस्तार दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र श्रीर उत्तर प्रदेश राज्य के मेरठ भीर वुसन्दशहर जिलों के क्षेत्रों पर है।
- (3) यह 6 मई, 1970 को प्रवृक्ष होगा, भौर उन बातो के सिवाय जो ऐसे प्रवर्शन की समाप्ति से पूर्व की गई या की जाने से रह गई हैं, 14 जुलाई, 1970 को प्रवृक्त नहीं रहेगा।
  - 2. परिभाषा.--इस ग्रादेश में, जब तक कि संदर्भ से, ग्रन्थणा ग्रपेक्षित न हो ---
  - (क) "नियन्त्रक ग्रिधिकारी" से वह भ्रिधिकारी श्रभिप्रेत ह जसे मेरठ भौर बुलन्दशहर जिलों के सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश राज्य सरकार ने भौर विल्ली संघ राज्य क्षेत्र के सम्बन्ध में दिल्ली प्रशासन ने इस आदेश के ग्रधीन नियंत्रक ग्रधिकारी की शिक्सियों का प्रयोग भीर कर्तें थों का पालन करने के लिए इस हैसियत में नियुक्त किया है।
  - (ख) "निर्यात" से ऐसे क्षेत्रों के, जिन पर इस श्रादेश का विस्तार है, भीतर के किसी क्षेत्र से उन क्षेत्रों के बाहर के किसी क्षेत्र को, किसी भी साधन से, ले जाना या लिया जाना श्रभिप्रेत हैं।
  - (ग) "दूध" से श्रभिप्रेत हैं गाय, भैंस, बकरी या भेड़ के थनों से प्राप्त प्रसामान्य, स्वच्छ, श्रौर ताजा स्नाव, श्रौर इसके भन्तर्गत वसा सहित या वसा रहित दूध; मट्टा, मानकित दूध, टोन का दूध, इवल टोन का दूध या दुग्ध चृर्ण से बना दूध श्राता है किन्तु इसके भन्तर्गत वह वस्तु नहीं है जिसे सामान्यतया सुखाया हुश्रा दूध या दुग्ध चूर्ण या संघनित दूध कहते हैं।
- 3. वूभ ग्राँर बुग्थ-उत्पादों के धिन्मिंग, पर समे, विकथ प्रदास या किसीत का प्रतिषेभः (क) कीम, कैसीन (दूध सत्व), कीम निकले दूध, खोया, रबड़ी, पनीर या किसी भी प्रकार की ऐसी मिठाइ यों का, जिन्हें तैयार करने में दूध या उक्त किसी उत्पाद का, घी के सिवाय, संघटक के रूप में प्रयोग किया जाता है, विनिर्माण करने के िए किसी भी प्रकार के दूध का प्रयोग नहीं करेगा; श्रथबा
  - (ख) किसी भी प्रकार । के दूध का निर्यात नहीं करेगा; अथवा
- (ग) क्रीम, कँसीन, क्रीम निकला दूध, खोया, रबड़ी, पनीर या क्रथ विसी ऽक्षार की मिठाई, जिसे तैयार करने में दूध या उस्के विसी, उत्पाद का, धी के सिवाय, प्रयोग संघटक के रूपू में

किया जाता है, नातो वेवेगा, नाप सेक्षेगा, ना प्रवाय करेगा और नानिर्यात करेगा और नाती ऐसा विकय, परोसा करना, प्रवाया या निर्यात करवाएगा :

परन्तु इस खण्ड की कोई भी बात :---

- (i) ऐसी प्राइसकीम, कुल्फी या कुल्फे के, जिसके तैयार करो में खोषा रवड़ी या कीम का प्रयोग नहीं होता, विनिर्माण के लिए दूध के प्रयोग और उनके विकय, परासने या निर्मात की लाबू नहीं होगी ;
  - (ii) शिशु दुग्ध अहार के विनिर्माण में लगे हुए किसी व्यक्ति दारा,
- (क) जिसका उपक्रम, उद्योग (विकास श्रीर विनियमन) श्रिधिनियम, 1951 (1951 का 65) के श्रधीन रजिल्द्रीकृत या प्रनुजापित किया गया है, तथा
- (ख) जो शिश दुः ध श्राहार के विनिर्माण के प्रग्रेज में के लिए, इस श्रादेश के प्रारम्भ से ठीक पूर्व किसी भी प्रकार के दूध का निर्मात करना रहा है, किसी भी गकार के दूध के निर्मात को लाग नहीं होगी यदि उस व्यक्ति ने नियंत्रक श्रधिकारी से उस ग्राशय की श्रनुज्ञित प्राप्त कर ली है।
- 4. प्रवेश, तलाशी, मिश्रिहण मादि की शक्ति गी.—कोई भी पुलिस मधिकारी जो हैंड कास्टेबल से नीचे के दर्जे का नहो या नियंत्रक मधिकारी द्वारा इस निमित्तलिखित रूप में प्राधिकृत कोई मन्य भ्यक्ति इस म्रादेश के म्रनुपालन को सुनिश्चित करने की दृष्टि से या भ्रपना यह समाधान करने की दृष्टि से कि भाइश का म्रनुपालन किया जा रहा है;
- (क) कि ने नाव्यक्ति को य कि ने नाव, नोटरया प्रत्य गानिया कि नी पान या मशीन सी को, जो दूध के निर्मात के लिए या दुग्ध उपायों के विनिर्माण के लिए प्रयोग में लाई गरी हो या जिसको प्रयोग में लाना भागां येत हो, रोक सकेगा और उसकी तलाशी ल सकेगा;
- (ख) जहां कि उसे यह विश्वास करने का कारण हो कि दूध का स्टाक किया गया है या वे चीजें दुग्ध उत्पादों के विनिर्माण, विकय, परोसर या प्रदय करने के लिए प्रयोग में लायी जा रही हैं, वहां, किसी भी स्थान या परिसर में प्रवेश कर सकेगा और उसकी तलाशी ने सकेगा;
- (ग) किसी भी स्थान या परिसर में कोई दूध या दुग्ध पदार्थ, श्रीर वे पैकेज, श्रावरण, पाल या मगीनरी, जिनमें दूध या दुध स्पदार्थ पाए जाते हैं या जिनके साथ ऐसे दुग्ध-पदार्थ पाए जाएं दी जिनमें ऐसे दुग्ध पदार्थ विनिक्ति किए जाते हैं या दूध या दुध पदार्थ ले जाले में उपयोग में लाए जाने वाले पश्चों, गाड़ियों, जलयानों या नावों या श्रन्य सवारियों को श्रिभगृहीत कर सकेगा या उत्का अभिग्रहण प्राधिश्वत कर सकेगा और इस प्रकार अभिग्रहीत पैकेजों, श्रावरणों, पाश्चों या मगीनरो को किसी स्यायालय में पेश करना श्रीर जब तक वे पेश न किए जाएं तब तक उनकी सुरक्षित श्रीभरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एत दुशरा सत्पश्चात सभी श्रावस्थक उपाय करेगा।
- (2) दण्ड प्रिक्त्या संहिता, 1898 (1898 का 5) की तलाशी और अभिप्रहण संबंधी धारामों 102 भीर 103 के उपबन्ध इस खण्ड के अधीत तलाशो और अभिग्रहणों को यावत्शक्य लागू होंगे

[संख्या 6-19/69-पशुधन विकास-1]
तिभवन प्रसाद सिंह, सचित ।